सर्वेश्वरवाद (Pantheism)

सर्वेश्वरवाद धार्मिक सिद्धांत का वह रूप है - जिसके अनुसार ईश्वर ही एकमात्र परमार्थ सत्ता है। सर्वेश्वरवाद को अंग्रेजी में 'pantheism' कहा गया है जो कि दो शब्दों से मिलकर बना है - 'Pan = all' + Theos = God. अर्थात 'All is God'. ईश्वर ही सब कुछ है. और सब ईश्वर से ही है, यही सर्वेश्वरवाद है।

सर्वेश्वरवाद की विशेषताएँ :→ इसकी अनेक विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं, जो निम्नवत हैं —

(1). सर्वेश्वर वाद के अनुसार ईश्वर एक है। यह असीम तथा सर्वव्यापी है, स्वतंत्र है, स्वयंभू है, अनादि तथा अनंत है।

(2). सर्वेश्वरवाद अनीश्वरवाद का पूर्ण विरोधी है, क्योंकि अनिश्वरवाद ईश्वर के अस्तित्व का खण्डन करता है जबकि सर्वेश्वरवाद विश्वास।

(3). इसके अनुसार ईश्वर और विश्व का सम्बन्ध अभिन्न एवं अवियोज्य है। ईश्वर के बिना विश्व की कल्पना करना कारण के बिना कार्य की कल्पना के तुल्य है। इसी प्रकार बिना विश्व के ईश्वर की कल्पना करना वैसा ही है, जैसे कार्य के बिना कारण की कल्पना करना। अत: ईश्वर संपूर्ण विश्व में व्याप्त है, इन्हें एक-दूसरे से अलग करना असंभव है।

(4). इसके अनुसार ईश्वर विश्व की रचना किसी काल विशेष में नहीं करता। इनमें कालिक सम्बन्ध नहीं है। दोनों चिरंतन हैं और इनमें शाश्वत संबंध है।

(5). यह ईश्वर को व्यक्तित्वरहित मानता है। इसमें इच्छा, संकल्प आदि का सर्वथा अभाव रहता है।

(6). ईश्वर विश्व का उपादान-कारण है। जिस प्रकार मिट्टी घड़े में व्याप्त रहती है, ठीक उसी प्रकार ईश्वर विश्व में व्याप्त रहता है।

(7). सर्वेश्वरवाद नियतिवाद का समर्थक है। इसके अनुसार विश्व-प्रक्रिया प्रयोजनहीन है।

(8). यह अनेकत्ववाद का विरोधी है। यह एक को सत्य और अनेक को मिथ्या बताता है। यह अनेकत्व को एकतत्व में ही समाहित बताता है। विश्व के सभी पदार्थ ईश्वर के विवर्त कहे गए हैं।

सर्वेश्वरवाद के उदाहरण :→ सर्वेश्वरवाद के उदाहरण पाश्चात्य विचारक स्पीनोजा और केकनर (Fechner) के दर्शनों में मिलता है।

सर्वेश्वरवाद के प्रकार :→ यह चार (4) प्रकार का होता है, जिन्हें हम तालिका द्वारा स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं—

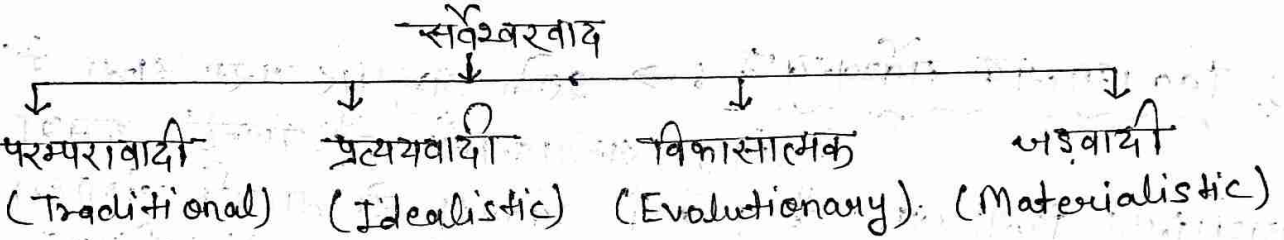

(1) **परम्परावादी सर्वेश्वरवाद :→** इस सिद्धांत को मानने वाले पाश्चात्य दार्शनिक स्पिनोजा हैं। वे इसके कट्टर समर्थक माने जाते हैं। उनके अनुसार मूल सत्ता द्रव्य है, जो एक, असीम, सर्वव्यापक तथा व्यक्तित्वरहित है। द्रव्य शाश्वत एवं स्वयंभू है। द्रव्य में अनेक गुण हैं, किंतु मानव अपूर्ण होने के कारण केवल दो ही गुणों को जान पाता है। ये गुण हैं- विचार (Thought) और विस्तार (Extension)। विश्व के चेतन पदार्थ ईश्वर के विचार-गुण के विकार (modes) हैं और जड़ पदार्थ उनके विस्तार-गुण के विकार हैं। ईश्वर और विश्व समानार्थक हैं। दोनों में अग्नि एवं अवियोज्य सम्बन्ध है। स्पिनोजा ईश्वर को व्यक्तित्वरहित मानते हैं, क्योंकि इसमें कल्पना, इच्छा, संकल्प आदि का अभाव रहता है। इस द्रव्य को ही वे 'ईश्वर' कहते हैं जिस पर समस्त विश्व आश्रित रहता है।

(2) प्रत्ययवादी सर्वेश्वरवाद :→ फेकनर के सिद्धांत को प्रत्ययवादी सर्वेश्वरवाद कहा जाता है। इस सिद्धांतानुसार, ईश्वर को आत्मा तथा विश्व को शरीर कहा गया है। अर्थात जो संबंध आत्मा और शरीर में है, वही सम्बन्ध ईश्वर और विश्व में है। जिस प्रकार शरीर में आत्मा का निवास है, उसी प्रकार विश्व में भी एक विश्वात्मा अर्थात ईश्वर का निवास रहता है। इस प्रकार से ईश्वर को चेतन सत्ता मानने के कारण फेकनर के सिद्धांत को प्रत्ययवादी सर्वेश्वरवाद कहा जाता है।

स्पिनोजा और फेकनर के सर्वेश्वरवाद में मौलिक अंतर यह है कि स्पिनोजा शरीर और आत्मा को समान महत्व देते हैं, किंतु फेकनर शरीर की अपेक्षा आत्मा को अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं।

(3) विकासात्मक सर्वेश्वरवाद :→ इसके अनुसार परम सत्ता में अनेक सम्भावनाएँ हैं जिन्हें क्रमशः कार्यान्वित किया जाता है। यहाँ विकास से तात्पर्य संभाव्य का यथार्थ में रूपान्तरित होना है। विकास के क्रम में सर्वप्रथम भौतिक तत्व का विकास होता है, तत्पश्चात जीवों का होता है। इसके बाद चेतन प्राणियों का फिर चेतन प्राणियों से आदर्श प्राणियों का विकास होता है। यहाँ परमसत्ता को माना गया है। इस विचार को हीगेल, ब्रेडले और बोसांके ने अपनाया है।

(4) भौतिकवादी सर्वेश्वरवाद :→ इस सिद्धांत को मानने वालों ने भौतिक पदार्थों के द्वारा एकरूपता की व्याख्या करनी चाही है। परन्तु यह मत मान्य नहीं है, क्योंकि हम विश्व में जड़ और चेतन दोनों का समावेश पाते हैं। ऐसी अवस्था में जड़ को ही मात्र अंतिम सत्ता मानकर चेतन की व्याख्या प्रस्तुत करना असंगत प्रतीत होता है। अतः यह मत पूर्णतः अमान्य है।

सर्वेश्वरवाद के कुछ उदाहरण भारतीय दर्शन में भी हम

पाते हैं। ईशावास्योपनिषद् की निम्न पंक्ति में सर्वेश्वरवाद की मीमांसा हुयी है, यथा – "ईशा वास्यमिदं सर्वयत्किञ्च जगत्या जगत्" अर्थात् जगत् में जो कुछ स्थावर-जंगम संसार है, वह सब ईश्वर के द्वारा आच्छादनीय है।

सर्वेश्वरवाद का मूल्यांकन :→ उपर्युक्त विवरणों के अनुसार हम सर्वेश्वरवाद के निम्नलिखित गुण पाते हैं।–

(a) यह रहस्यवाद की पुष्टि करता है। रहस्यवाद एक ऐसा दार्शनिक सिद्धांत है, जिसके अनुसार साधक अपने को इष्टदेव के साथ विलीन कर देता है, अर्थात् जिसमें उपासक और उपास्य के बीच द्वैत नहीं कर पाता। इस प्रकार से सर्वेश्वरवाद भी ईश्वर को ही संपूर्ण विश्व मानता है। सभी प्राणी ईश्वरमय हैं। अतः यह रहस्यवाद की सृष्टि करता है।

(b) सर्वेश्वरवाद का दृष्टिकोण वैज्ञानिक है। वैज्ञानिक युग को बौद्धिक युग भी कहा जाता है। बुद्धि का स्वभाव है कि वह अनेकता में एकता का दर्शन करना चाहती है। चूंकि सर्वेश्वरवाद भी अनेकता की व्याख्या एकता के आधार पर करता है, जिसके अनुसार परम सत्ता एक है और अनेकता इसी एक सत्ता का विकार है। इस प्रकार इससे बौद्धिक जिज्ञासा की संतुष्टि होती है।

इन सब गुणों के रहने पर भी सर्वेश्वरवाद दोषरहित नहीं कहा जा सकता। इसमें दार्शनिक और धार्मिक दोनों दृष्टिकोणों से दोष पाए जाते हैं। यह न तो मस्तिष्क को संतुष्ट कर सकता है और न हृदय को ही।